Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आत्मनिर्भर भारत और महिलाओं की बदलती भूमिका (विश्लेषणात्मक अध्ययन)

डॉ. मनिता कौर विरदी*

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (राजनीति विज्ञान) शासकीय महाविद्यालय, बिछुआ, छिंदवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महिलाओं की भूमिका केवल भागीदारी तक सीमित नहीं है, बल्कि वे इस अभियान की धुरी बनकर उभरी हैं। आज महिलाएं घर की चारदीवारी से निकलकर देश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना को मजबूत कर रही हैं।वर्तमान समय में महिलाओं की हिस्सेदारी समाज के सभी क्षेत्रों में है। महिलाओं ने वर्तमान में घर काम से लेकर विज्ञान के क्षेत्र में भी अपनी अहम भूमिका निभाई है। इतना नहीं आज महिलाओं ने शिक्षा, व्यापार, उद्योग, कृषि, बैंकिंग जैसे क्षेत्रों में भी अपनी अहम भूमिका का निर्वहन किया है। सशक्त समाज से सशक्त राष्ट्र का निर्माण होता है। महिलाएँ समाज का अहम हिस्सा (अंग) है। वर्तमान समय में महिला, उद्योग में पुरूषों के समान कार्य कर रही है। वर्तमान समय में भारत में आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों से आर्थिक विकास का क्षेत्र बढता जा रहा है। उद्यमियों का समाज व्याप्त आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक कारकों पर निर्भर करता है। आत्मनिर्भर भारत में महिलाओं के योगदान ने सामाजिक सुधार, महिलाओं के बाल विवाह, दहेज प्रथा और जातिवाद जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएँ अपनी जरूरतों और सपनों को पूरा करने के लिये दूसरों पर निर्भर नहीं रहती। यह उन्हें अपने परिवार की वित्तीय स्थिति में योगदान करने का अवसर देता है। आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं को आत्मनिर्भरता के साथ-साथ आत्मविश्वास प्रदान करती है और उन्हें अपने जीवन के बडे फैसले लेने में सक्षम भी बनाती है। महिलाओं की आत्मनिर्भरता से उनका मनोबल बढ़ता है। यह उन्हें अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वतंत्रता और आत्मविश्वास देता है। आत्मनिर्भर महिला समाज में बदलाव लाने में सक्षम होती है और अपनी पहचान बनाने में सफल रहती है।

शब्द कुंजी –आत्मनिर्भरता, अर्थव्यवस्था,स्वतंत्रता, उद्यमिता।

प्रस्तावना – वैदिक युगीन भारतीय स्त्री का इतिहास हमें वेद, पुराण, उपनिषदों आदि से प्राप्त होता है। वैदिक समाज वर्णाश्रम व्यवस्थाओं की अत्यंत सरल व स्पष्ट मान्यताओं पर आधारित था। विद्धतजनों की ऐसी मान्यता है कि इस युग में नारी की स्थिति केवल सम्मानजनक ही नहीं अपितु गौरवपूर्ण थी। वेदो में ऐसे अनेक सूक्त है जिनमें विवाह के अनेक प्रकार, नियोग, सम्पत्ति का विभाजन, अतिरिक्त लाभ,स्त्रीधन आदि पर प्रकाश डाला गया है जो स्त्री के सम्पत्ति के अधिकारों के साथ अर्थव्यवस्था में नारी के योगदान की जानकारी उपलब्ध कराते है।प्राचीन काल से ही नारी पुरूष की सहगामिनी मानी जाती रही है। वह अपने पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक योगदान करती थी। प्राचीनकालीन साहित्य में ऐसे अनेक उद्धरण मिलते है, जिनमें नारी को शिक्षिका, पशुपालक, कृषि कार्यो में सहायक, दासी, शिल्पकारी, इत्यादि के रूप में चित्रित किया है। प्राचीन भारत की स्थापत्य कला में नारी को कलाकार, श्रम कार्य करते हुए तथा वजन उठाते हुए अंकन किया गया है।'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' प्राचीन काल का यह लोक आज के आत्मनिर्भर भारत में एक नया स्वरूप ले चुका है। आज की भारतीय महिला केवल पूजनीय ही नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की एक सशक्त आधारशिला बन गई है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत भारतीय महिलाओं की तस्वीर में एक क्रांतिकारी बदलाव आया है। आज महिलाएँ केवल घर की चारदीवारी तक सीमित न रहकर देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति की मुख्य धुरी बन चुकी हैं।

भारत की कल्पना महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बिना अधूरी है, और वे आज इस मिशन की सबसे मजबूत कड़ी साबित हो रही हैं।प्रधानमंत्री द्धारा शुरू किया गया आत्मनिर्भर भारत अभियान महिलाओं के लिए केवल एक नारा नहीं, बल्कि उनके सपनों को पंख देने वाला एक सशक्त मंच साबित हो रहा है।शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार ने महिलाओं को सामाजिक रूढ़ियों से बाहर निकाला है। अब वे केवल घर की जिम्मेदारी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, अंतरिक्ष मिशनों का नेतृत्व कर रही हैं और स्टार्टअप्स के माध्यम से रोजगार पैदा कर रही हैं। यह बदलती तस्वीर केवल आर्थिक नहीं, बल्कि एक गहरी मानसिक और सामाजिक क्रांति है।ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक सखी के रूप में महिलाएँ बैंकिंग सेवाओं को घर-घर पहुँचा रही हैं। वे अब केवल बचत नहीं कर रहीं, बल्कि डिजिटल निवेश और शेयर बाजार जैसे विषयों में भी रुचि ले रही हैं।

एक आत्मनिर्भर राष्ट्र तभी संभव है जब उसकी आधी आबादी पूरी तरह सशक्त और स्वतंत्र हो। आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में महिलाएँ आज अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। वे न केवल अपने परिवार का सहारा बन रही हैं, बल्कि देश की जीडीपी (GDP) में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। वास्तव में, महिलाओं की बदलती तस्वीर ही भारत के सुनहरे भविष्य का

प्रतिबिंब है।

उद्देश्य:

1. आत्मनिर्भर महिलाओं के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं व चुनौतियों की पहचान करना।
2. आत्मनिर्भर भारत अभियान के संदर्भ में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. शिक्षा कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की संभावनाओं का मूल्यांकन करना।
4. नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना, जिससे महिलाओं की भागीदारी अधिक सषक्त और प्रभावी हो सके।
5. महिला नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स और सूक्ष्म उद्योगों की सफलता दर और उनके प्रभाव का विश्लेषण करना।
6. यह पता लगाना कि डिजिटल इंडिया अभियान ने महिलाओं को ऑनलाइन व्यापार और ई-कॉमर्स से जुड़ने में कितनी मदद की है।
7. प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत महिलाओं की बदलती भूमिका और उनके आर्थिक सशक्तिकरण का विश्लेषण करना है,
8. आत्मनिर्भर भारत के तहत महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।

आंकड़ों का संकलन – द्वितीयक समंकों को ग्रंथालय पद्धति व प्रकाशित प्रतिवेदनों, सरकारी प्रकाशनों ,पत्र-पत्रिकाओं एवं इटंरनेट के द्वारा तथ्यों को संकलित किया जायेगा।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध पत्र विश्लेषणात्मक एवं द्वंदात्मक पद्धति पर आधारित होगा।

विष्लेषण – 12 मई 2020 को घोषित आत्मनिर्भर भारत अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का केंद्र बनाना है। इस अभियान की सफलता में देश की आधी आबादी, यानी महिलाओं की भागीदारी अनिवार्य है। पारंपरिक रूप से घरेलू कार्यों तक सीमित महिलाएं अब जॉब सीकर के बजाय जॉब क्रिएटर बन रही हैं।ग्रामीण महिलाओं के आत्मनिर्भर बनाने का स्वयं सहायता समूह एक बेहतरीन तरीका है। वे अपना समूह बनाकर किसी भी कार्य को शुरू करने के लिए लोन ले सकती हैं और काम शुरू कर सकती हैं। जैसे - पापड, आचार, सिलाई, बुनाई (कला कृतियां) आर्ट और क्रॉफ्ट, बैंकिंग आदि कुटीर क्षेत्र में अपनी कला को विकसित कर सकती हैं। इन उत्पादों को ऑनलाइन या बाजार में बेचकर उन्हें आय उपलब्ध करा सकती हैं। आई.टी. और डिजिटल सेवाएं, घरेलू महिलाएं आई.टी. या डिजिटल सेवाओं के क्षेत्र में अपनी योग्यता के आधार पर काम कर सकती है। वे वेबसाइट डिजाइन, सॉफ्टवेयर डेव्हलपमेंट, साइबर सुरक्षा, डिजिटल मार्केटिंग, सोशल मीडिया प्रबंधक, वर्चुअल असिस्टेंट आदि में काम कर सकती हैं। घरेलू उपयोगिता और अनुप्रयोग, घरेलू महिलाएं घर में बनाए गए उपयोगी वस्त्र, आभूषण, स्नान गृह, आर्गेनिक उत्पाद, अदरक, लहसुन पेस्ट, आदि की बिक्री कर सकती है। इस प्रकार आत्मनिर्भर महिलाएं अपने उत्पादों का प्रचार कर सकती हैं और उन्हें ऑनलाईन प्लेटफार्म पर बेचकर आय प्राप्त कर सकती हैं। सरकारी योजनाएं (जैसे - कौशल विकास योजना, जन धन योजना, मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया) यह सभी योजनाएं महिलाओं को आत्मनिर्भर व आर्थिक सशक्तिकरण हेतु चलाई जा रही है, किन्तु इसका प्रभाव व लाभ ग्रामीण क्षेत्र के वंचित वर्ग की महिलाओं तक पूरी तरह नहीं पहुंच पाया है। सरकारी योजनाओं जैसे बेटी बचाओ, बेटी पढाओ, उज्ज्वल योजना, महिलाओं के जीवन पर कितना प्रभाव पड़ा है, इसका मूल्यांकन एवं देश में अनेक योजनाएं एक साथ क्रियान्वित की जा रही है, परन्तु किस योजना का किस वर्ग की महिलाओं पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ा इसका तुलनात्मक एवं क्षेत्रीय अध्ययन व्यापक रूप से नहीं किया है। लखपति दीदी योजना योजना के तहत महिलाओं को स्किल डेव्हलपमेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम दिया जाता है। महिलाओं को अपना बिजनेस शुरू करने के लिए इस योजना के माध्यम से दिशा दिखाई जाती है। इस स्कीम के तहत महिलाओं को एल.ई.डी बल्ब, बैग, खाद्य सामग्री और कई अन्य कार्यो के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। इस योजना में महिलाओं को बिना ब्याज के 5 लाख तक का लोन प्रदान किया जाता है। इस योजना में सरकार का स्वयं सहायता समूह (SHG)से जुडी महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त व आत्मनिर्भर बनाने का सपना साकार हो रहा है। भारत में महिला रोजगार कार्यक्रम मंत्रालय एक केन्द्रीय क्षेत्र की योजना के रूप में महिलाओं के लिए प्रशिक्षण एवं रोजगार कार्यक्रम सहायता (STEP)योजना का संचालन करता है। STEP योजना का उद्देश्य महिलाओं को ऐसे कौशल प्रदान करना है, जो उनकी रोजगार क्षमता को बढाए और उन्हें स्वरोजगार या उद्यमी बनने में सक्षम बनाए। महिलाओं ने औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश किया है। देश में लघु उद्योग में महिला उद्यमियों की हिस्सेदारी 7.7 प्रतिशत है। महिलाएं स्वत: कौशल सम्पन्न होती है। पारिवारिक, सामाजिक और शैक्षिक के साथ-साथ ही वह आर्थिक क्षेत्र में भी कामयाब हो रही है। वह अपने स्तर पर घर में भी अपने कौशलों का उपयोग कर धनोपार्जन करके परिवार चला रही

वर्तमान में भारत में लगभग 1.2 करोड़ स्वयं सहायता समूह हैं, जिनमें 80% से अधिक सदस्य महिलाएँ हैं। शोध के अनुसार, आत्मनिर्भर भारत के वोकल फॉर लोकल मंत्र को धरातल पर उतारने का श्रेय इन समूहों को जाता है। मास्क बनाने से लेकर सौर पैनल असेंबल करने तक, ग्रामीण महिलाओं ने सूक्ष्म उद्योगों के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती दी है।भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी में पिछले 5 वर्षों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। मुद्रा योजना के तहत दिए गए ऋणों में से लगभग 70% महिलाओं को मिले हैं। यह विश्लेषण दर्शाता है कि वित्तीय समावेशन ने महिलाओं के भीतर जोखिम लेने की क्षमता और नवाचार को जन्म दिया है।

महिला सशक्तिकरण अब केवल एक सामाजिक लक्ष्य नहीं, बल्कि देश की आर्थिक प्रगति की अनिवार्य शर्त बन गया है। हालांकि, तकनीकी शिक्षा और डिजिटल साक्षरता की कमी अभी भी एक बड़ी बाधा है, लेकिन महिला-नेतृत्व वाले विकास की ओर बढ़ते कदम यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि महिलाएँ अब केवल आर्थिक लाभ प्राप्त करने वाली लाभार्थी नहीं, बल्कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने वाली मुख्य चालक हैं,आत्मनिर्भर भारत और महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण यह दर्शाता है कि अब भारत महिलाओं के विकास से आगे बढ़कर महिला-नेतृत्व वाले विकास की ओर स्थानांतरित हो चुका है। G20 शिखर सम्मेलन के दौरान भी भारत ने वैश्विक स्तर पर इस बात को सिद्ध किया है कि महिलाएँ अब अर्थव्यवस्था की मूक भागीदार नहीं, बल्कि निर्णय लेने वाली मुख्य भूमिका में हैं। वर्तमान में ड्रोन दीदी जैसी योजनाएँ और स्टेम शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती 43% भागीदारी यह प्रमाणित करती है कि वे आधुनिक तकनीक और नवाचार के माध्यम से देश

को आत्मनिर्भर बना रही हैं।

इस प्रकार आत्मनिर्भर महिलाएं अपने कौशल और प्रतिभा के आधार पर आर्थिक रूप से स्वावलंबी बन सकती हैं एवं परिवार व समाज के विकास के साथ-साथ देश के विकास में भी अपना महित्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकती है।

निष्कर्ष – आत्मनिर्भर भारत का सपना महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बिना अधूरा है।महिलाएं अब केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था की विकास चालक बन गई हैं। स्टार्टअप्स और एमएसएमई क्षेत्र में उनकी बढ़ती संख्या इसका प्रमाण है।मुद्रा योजना और स्टैंड-अप इंडिया जैसी पहलों ने महिलाओं के लिए पूंजी की बाधा को कम किया है, जिससे उनके भीतर जोखिम लेने की क्षमता और उद्यमशीलता बढ़ी है।डिजिटल साक्षरता ने ग्रामीण और शहरी महिलाओं के बीच की दूरी को कम किया है, जिससे वे अपने उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुँचा पा रही हैं।सकारात्मक बदलाव के बावजूद, सामाजिक रूढ़िवादिता और दोहरे कार्यभार (घर और बाहर) की चुनौतियां आज भी मौजूद हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिए और अधिक समावेशी नीतियों की आवश्यकता है।आत्मनिर्भर भारत केवल एक आर्थिक नीति नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति है। जब महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, तो इसका लाभ पूरे परिवार और समाज को मिलता है।

सुझाव:

1. ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष डिजिटल साक्षरता कैंप लगाए जाने चाहिए ताकि वे ई-कॉमर्स और ऑनलाइन बैंकिंग का प्रभावी उपयोग कर सकें।
2. महिला उद्यमियों के लिए बैंक ऋण की प्रक्रियाओं को और अधिक सरल और कम ब्याज दर वाला बनाया जाना चाहिए, विशेषकर बिना किसी गारंटी वाले ऋणों पर जोर देना चाहिए।
3. स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्योगों के लिए महिलाओं को तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जैसे खाद्य प्रसंस्करण और हस्तशिल्प।
4. अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. श्रीवास्तव डॉ. प्रमिला : महिला सषशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन रजत पब्लिकेशन नई दिल्ली।
2. वर्मा डॉ. नीता : महिला विकास एवं योजनाएं गंगा पब्लिकेशन।
3. तिवारी डॉ. रंजना भारतीय महिलाए और आत्मनिर्भरता भारतीय समाज विकास परिषद।
4. चटोपाध्याय, अरूंधती भारत में महिला सशक्तिकरण, नीति, मार्ग, (पाक्षिक) भोपाल।
5. महिपाल -पंचायत राज, चुनौतियां एवं संभावनाएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 2005
6. आशु, डॉ. रानी - महिला विकास कार्यक्रम, एन.ए. श्री पब्लिशर्स, जयपुर संसकरण 2006
7. चौधरी डॉ. अशोक,ग्रामीण महिलाएं और स्वरोजगार, साहित्य निकेतन
8. जैन डॉ.कैलाश चन्द्र,प्राचीन भारतीय सामाजिक व आर्थिक संस्थाएँ।
9. Desai M, women and empowerment in India, Himalaya publishing house.

वेबसाइट :

1. https://mudrabank.com
2. https://www.ijisrt.com
3. https://www.drishtiias.com

पत्र एवं पत्रिकाएं:

1. कुरूक्षेत्र।
2. योजना।

****